

रघुनाथ के सनेही भोलानाथ त्रिपुरारी, संगि शैल की कुमारी ।  
 आए गंध मादन गिरि पै, कैलाश के बिहारी—संगि शैल  
 गहिबर सुगंधि ठण्डिड़ी है छाया जिसकी सुन्दर  
 लखि सनातन बट वृक्ष को भए मगनु प्रेम मन्दिर  
 सियाराम यादि आए दुख साथी विपिन चारी, गौर शाम धनुष धारी ॥  
 पुलकावली अंगनि में भई रुधि कंठ वाणी  
 गात स्वेद कण से भीगे सुरिति भाव में समाणी  
 धन्य धन्य शब्द मुख में नैनों से नीर जारी, छिपी प्रेम की खुमारी ॥  
 लखि शिव को प्रेम पूरण बोले नदी हर्ष भर भर  
 सुनु मातु श्री भवानी रस भीने दानी अवढर  
 यह बेला अति सुहावन सतिसंग की सुखकारी, प्रभू राम कथा प्यारी ॥  
 बोले महेश महिशी सुनु बाल नन्दी प्यारे  
 प्राण नाथ के हैं कारज लोक वेद से न्यारे  
 विषु कंठ शीश गंगा करुणा निधी कामारी, शांति मूरति प्रलय कारी ॥  
 अपनी ही मौज में हो मस्त नृत्य करते  
 ना जानूं कवन भाव में आंखो से नीर झरते  
 इस हेतु बोलने में भय होता रहे भारी, पहिले भी हूं मैं हारी ॥  
 कहा विनीत हो नन्दीश्वर प्रभू सकल भव के भंजन  
 परम कारुणीक स्वामी निज सेवक हृदय रंजन  
 सति संग के विलासी हरी भक्ति के भण्डारी, महिमा अपरम्पारी ॥

शरणागतों के वत्सल प्रणत जननि आर्त त्राता  
आशुताष अनंत शक्ति प्रभू आनंद दाता  
क्यों डरती उनसे मैया जो जगत के हितकारी, करे मैगसि रखवारी ॥